Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SHISRRJ | Volume 1 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

नागार्जुन के काव्य में राजनैतिक चेतना

हरिकेश मीना
राजकीय कन्या महाविद्यालय, करौली, राजस्थान।

शोधसारांश– नागार्जुन सम्पूर्ण रूप से शोषण के खिलाफ संघर्श के लिए समर्पित रहे हैं। इसलिए देश की कोई भी सामाजिक व राजनीतिक घटना उनकी कविताओं से नहीं बच सकी हैं। इनकी कविताओं में भोगा हुआ दर्द हैं, सच्चा आक्रोंश हैं। इनकी कवितायें आम आदमी के जीवन का जीबन्त दस्तावेज हैं। उनकी कविताओं में व्यंग्य, आक्रोश एवं बेचैनी दिखाई देती हैं। उनकी कवितायें आम आदमी के लिए लिखी गई हैं इसलिए उन्हें जनवादी कवि कहा जाता हैं।

मुख्य शब्द–नागार्जुन, काव्य, राजनैतिक, चेतना, सामाजिक, आर्थिक, यथार्थ, समाज।

लोक चेतना के चितेरे कवि नागार्जुन के रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक यथार्थ की गहरी पकड़ है। समाज में व्याप्त बुराईयों, अन्ध–विश्वासों, रूढ़ियों और दलित शोषक वर्ग के लोगों को उनका गहरा अनुभव है। व बिना किसी लाग पलेट के समाज में व्यापत बुराईयों, कमियों, विडम्वनाओं की खुले तौर पर कडें शब्दों में निन्दा करते है। और न केवल अपनी रचनाओं से बल्कि जीवन में भी दलित शोषित, वर्ग के लिए निरंतर संघर्श करते रहे है। क्योंकि जनवादी कवि नागार्जुन के हृदय में भारतीय जन जीवन के लिए असीम प्रेम भरा हुआ है और निम्न वर्ग के अभावों के स्वयं भोक्ता रहें है। इसलिए इस विद्रोही कवि ने जन जीवन को उन्नत बनाने के लिए जागरण का विगुल फूका सामान्य जन जीवन को यातना और प्रताडना से बचाने के लिए क्रांति का उदघोस किया। जन जीवन को सुख सुविधाएं प्रदान करने के लिए अन्याय एवं अत्याचार का विरोध किया है। जन जीवन को शान्ति एवं समृद्धि प्राप्त कराने के लिए ही चीनी आक्रमण का डटकर मुकावला करने के लिए प्रेरित किया है ।

नागार्जुन सच्चे जन कवि है। और सच्चा जन कवि अपने आस पास होने वाली घटनाओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। हमारे रोजमर्रा के जीवन ने आम आदमी कितना दारूण स्थितियों के मध्य जी रहा है । और आज की राजनीति भी इतनी फूहड होती जा रही है कि उसे साधारण जन के दुख दर्द से कोई मतलब नहीं है। अपने तुच्छ स्वार्थों के लिए वोट की राजनीति के लिए कवि गरीबों पर अत्याचार तो कभी सामप्रदायिक दंगों की आंच से अपने अपने हाथ सेकते है । नागार्जुन राजनैतिक रूप से अधिक सयक्त

कवि है। इसकी कवितायें सम वेदन शिलता और गहन भाव बोध से संयुक्त है। सामाजिक रूप से सामाजिक विद्रूपता , राजनीतिक छल और धार्मिक अंध–विश्वासों पर चुभते व्यंग्य करने में कुशल हैं। इन्होंने सामाजिक और राजनैतिक दोनों तरह की व्यंग्य रचनाएं की है। सामाजिक व्यंग्य कविताओं के मूल में जहां करूणा है वहां राजनीतिक व्यंग्यों में उपहास और खिल्ली उड़ाने की प्रवृत्ति है। नागार्जुन के व्यक्तिव और कृतित्व पर राहुल एवं निराला का प्रभाव है। राहुल जी से प्रेरित होकर राजनीतिक क्षेत्र में आये और निराला जी से प्रेरित होकर साहित्यिक क्षेत्र में आये ।

डॉ. नामवर सिंह जी कहते हैं–''हिन्दी में व्यंग्य या तो निराला ने लिखा है या नागार्जुन ने।''[1] नागार्जुन ने अपने साहित्य में समाज के अन्तर्विरोधों और सांस्कृतिक जनता के प्रति आक्रामता के रूख को अपनाया है। वे ऐसे समाज के प्रति चिन्तनशील हैं जिसकी संस्कृति जनोनमुख और प्रेरणा दायक न होकर विलासी और फूहड़ मंनोरजन वादी होती जा रही है। लोकमंगल के स्थान पर निज मंगल की प्रबल होती भावना के विरोध में हैं। डॉ. त्रिभुवन सिंह के शब्दों में–''कवि की दृश्टि जीवन के हर उन पहलुओं पर गई है, जिनसे आप आदमी प्रभावित होता है। अपने लेखकीय व्यक्तित्व में जिस ईमानदारी का जोंखिम नागार्जुन ने उठाया है वह सब के बस की बात नहीं है। नागार्जुन के पैने व्यंग्य हिन्दी साहित्य में अपना अलग स्थान रखते है।'' [2]

नागार्जुन आज की राजनैतिक चालों से दुःखी हैं। क्योंकि आज के नेता जन–सामान्य के हितों के स्थान पर व्यक्तिगत भोग विलास अर्थात् अपने सुख सुविधाओं में लिप्त हैं। गांधी जी के नाम पर हो रहे अत्याचारों और शोशण से पीडित हैं। गांधी जी के चेलों पर व्यंग्य करते हुए वे लिखते है–''बेंच–बेंच कर गांधी जी का नाम वटोरों वोट बैंक बैंलेन्स बढाओं राजघाट पर बापू की वेदी के आगे अश्रूबहाओं''[3] नागार्जुन राजनैतिक दृश्टि से एक सजग लेखक हैं। जो तमाम चिजों को गहराई से समझते और परखते हैं। नागार्जुन प्रगतिशील कवियों के खास हैं, राजनितिक दृश्टि से सर्वाधिक सजक हैं। राजनीतिक उथल–पुथल के युग में वे भारी संख्या में राजनीतिक कवितायें लिखते हैं। यह उनके लिए आकस्मिक नहीं हैं, इन्होंने गांधी जी नेहरू, मोरारजी, राजनारायण एवं संजय गांधी पर व्यंग्य कवितायें लिखी हैं। इसके साथ ही राश्ट्रीय एवं अर्न्तराश्ट्रीय घटनाओं और राजनीति पर भी कवितायें लिखिी हैं। नागार्जुन के राजनैनितक विचार एक दम स्पश्ट हैं। वे समकालीन राजनीति और उससे संचालित जीवन से गहरे जुड़े हुये हैं। वे अपनी सीधी साधी भाशा में ''शासन को बन्दूक'' कविता में लिखते हैं–''सत्य स्वयं घायल हुआ, अहिंसा चूक/जहां तहां दगने लगी शासन की बन्दूक/जली ठूंठ पर बैठ गई कोकिला कूल/बाल न बाका कर सकी शासन की बन्दूक'' ।[4]

नागार्जुन निर्भीक कवि हैं वे डरना जानते ही नहीं देश की सर्वोच्च सत्ता भी जब कोई गलत निर्णय लेती हैं। तो उनकी कविता चुनौती देती हैं। जैसे 'आओ रानी हम ढोएंगे पालकी,' 'काली माई' , 'शासन की बन्दूक' 'क्या हुआ आपको', 'देवी गौरी है या काली' 'अब तो बन्द करों हे देवि यह चुनाव का प्रहसन' । इन रचनाओं नागार्जुन की निड़रता वेबाकी देखाी जा सकती हैं। 'क्या हुआ आपको' 'कविता में प्रधानमंत्री पर किया गया व्यंग्य इस प्रकार हैं–''इन्दु जी, इन्दु जी क्या हुआ आपको/सत्ता की मस्ती में भूल गई बाप को'' ।[5]

नागार्जुन का अहिंसात्मक क्रांन्ति से विश्वास उठ गया हैं। वे हर रोज देखते है की गिद्ध किस तरह सामान्य जन –जीवन को शोशण कर रहे हैं। नेता और शासक वर्ग सारे काम अपने हित के लिए करते हैं। सर्वहारा वर्ग की मेहनत से उत्पन्न धन दौलत को वे अपने भोग–विलास के लिए पानी की तरह बहा रहें हैं। लोक के चितेरे कवि नागार्जुन की सबसे बड़ी विशेशता स्पश्टवादिता हैं। इतनी हिन्दी के किसी कवि में नहीं हैं। वे बरावर शासक हो या राजनीतिक दल सब पर गहरी नजर रखते हैं। कोई भी उनकी नजर से छुट नहीं सकता । प्रजातंत्र की होम कविता में वे कहते हैं–'' सामन्तों ने कर दिया प्रजातंत्र का होम/लाश बेचने लग गये खादी पहने लोग''[6]

कांग्रेस के प्रति नागार्जुन में सदा से विरोध का भाव रहा हैं। 'हत्यारें, 'हाय रे ओ आला कमान', प्रजातंत्र की होम, दिल्ली की देवि' आदि अनेक कविताओं इन्होंने कांग्रेस नेताओं के चरित्र, कांग्रेस की दशा एवं दिशा पर तीखा विश्लेशण किया हैं। सत्ता सीन होने पर कांग्रेसी सोते रहते हैं। और चुनाव के समय ही जागते हैं। नागार्जुन ने कई कविताओं में इंदिरा गांधी और उनकी राजनीति पर तल्ख टिप्पणी की हैं। बांग्लादेश की निर्माण कराके वे अंहकार में डूब गई थीं, जब ही कृत्य अशुभकारी ही था। 'अब तो बन्द करों देवि यह चुनाव की प्रहसन' शीर्शक कविता में नागार्जुन कहते हैं–'' देवि ! तुम्हारे दाएं–बांए, यह मुजीब सिद्धार्थ/नये सिरे साधेंगे अब स्वार्थ और परमार्थ...../ महाक्रांति की प्रबल वृद्धि में होगी सत्ता/अरूणाई में दमक उठेगें, ढाका और कलकत्ता''। सन् 1967 के बाद देश में दल–बदल और अवसरवादी राजनीति का उदय हुआ, राजनीति में दलित शोषित वर्ग के बाहुवलियों का वर्चस्व बढ़ने लगा। अभी तब ये दलित पिछड़े बाहुबली कांग्रेस को जीताने का कार्य करते थे। अब स्वयं संसद का विधानसभाओं में स्थान पाने लगे। नवें दशक में एक अद्भुद क्रांति ने जन्म लिया। कांशीराम–मायावती के नेतृत्व में बहुजन समाज पार्टी ने अपना आकार ग्रहण किया 'मायावती मायावती' नामक कविता में मायावती को उभरती शक्ति मानते हुये नागार्जुन कहते हैं– '' मायावती मायावती/दलितेन्द्र की छायावती छायावती...../ जय जय हे दलितेन्द्र।'' [7]

नागार्जुन ने आपातकाल के विरोध में कई कवितायें लिखी हैं–'' जैसे– धज्जी धज्जी उडा दी छोकरों ने'' इन्होंने जयप्रकाश नारायण के समर्थन में बाद में उनके विरोध में भी कवितायें लिखी

हैं–''जयप्रकाश पर पड़ी लोक की लाठियाँ' कविता में लिखा हैं– ' एक और गांधी ही हत्या होगी अब क्या?/बर्बरता के भोग चढ़ेगा भोगी अब क्या?/पोल खुल गई शासक दल के महामंत्र की/जयप्रकाश पर पड़ी लाठियाँ लोकतंत्र की'' ।[8]

डॉ. नामवर सिंह जी कहते है '' व्यंग्य की विद्ग्धता ने ही नागार्जुन को अनेक तात्कालिक कविताओं को कालजयी बना दिया हैं'' ।[9]

जिसके कारण वे कवि वासी नहीं हुई हैं और अब भी तात्कालीक बनी हुई हैं। नागार्जुन सम्पूर्ण रूप से शोषण के खिलाफ संघर्श के लिए समर्पित रहे हैं। इसलिए देश की कोई भी सामाजिक व राजनीतिक घटना उनकी कविताओं से नहीं बच सकी हैं। इनकी कविताओं में भोगा हुआ दर्द हैं, सच्चा आक्रोंश हैं। इनकी कवितायें आम आदमी के जीवन का जीबन्त दस्तावेज हैं। उनकी कविताओं में व्यंग्य, आक्रोश एवं बेचैनी दिखाई देती हैं। उनकी कवितायें आम आदमी के लिए लिखी गई हैं इसलिए उन्हें जनवादी कवि कहा जाता हैं।

सन्दर्भ ग्रंन्थ सूचीः–

1. द्वारिका प्रसाद सक्सेना– हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृश्ठ, 477
2. त्रिभुवनसिंह– आधुनिक साहित्यिक निबंध, तृतीय संशोधित संस्करण, 1998, पृश्ठ, 400
3. नागार्जुन– युगधारा, पृश्ठ, 25
4. नामवरसिंह– नागार्जुन की प्रतिनिधि कवितायें (शासन की बन्दूक), संस्करण, 2009, पृश्ठ, 105
5. नागार्जुन– क्या हुआ आपको, पृश्ठ, 20
6. नागार्जुन–प्रजातंत्र की होम
7. नागार्जुन– अब तो बन्द करों देवि चुनाव का प्रहसन
8. नागार्जुन– रचनावली–2 पृश्ठ, 465
9. सत्यनारायण नागार्जुनः कवि और कथाकार